हमारी बात

यह दोनों घटनाएं पिछले सप्ताह की हैं। लगभग 35 वर्षीय देवी (नाम बदल दिया है) रोती-कल्पती अपनी मां के साथ आई। देवी के माथे और होंठों के पास चोटों के निशान थे। मैं समझ गई—फिर पति ने मारा-पिटा है और देवी मां के घर आ गई दुखी होकर। पिछले कुछ सालों में यह चौथी बार देवी मार खाकर मां के घर आई है। रो-रोकर कहती है: शर्म आती है यहां आने में। बहुत बार तो रो-पीट कर वहीं सब्र कर लेती हूं।

देवी का पति क्यों मारता है? देवी के सास-ससुर उसकी तरफदारी करते हैं, इससे चिढ़ कर पति और मारता है। कारण जब वह काम से लौटता है (सफाई कर्मचारी है कार्पोरेशन में) तो दारू के नशे में धुत्त होता है और घर आते ही देवी को अपनी गोद में लिटाए रखना चाहता है। चार बच्चे हैं। देवी भी दिहाड़ी पर सफाई कर्मचारी है और घर लौट कर खाना बनाना है, बच्चों को देखना है। पति को यह नागवार गुजरता है। बस, मारपीट।

दूसरी घटना। मति लगभग 45 साल की है। तीन लड़कों की मां। पति सरकारी कार्यालय में चपरासी है—पक्की नौकरी। लेकिन आए दिन पत्नी से झगड़ा, मार-पीट। कारण: पति शक का शिकार है कि उसकी गैरहाजरी में पत्नी ताक-झांक करती है दूसरे मर्दों से। अपने में दोनों पति-पत्नी बहुत शरीफ है। पति को कोई ऐब नहीं लेकिन पत्नी पर बेबुनियाद शक ने उनका घर बरबाद कर दिया। मार-पीट से तंग आकर मति ने अपने पति का घर छोड़ दिया और कोठी में काम कर गुजारा चला रही है। बड़ा लड़का पति के साथ, दो मति के साथ। वे भी काम करते हैं।

आमतौर से घर टूटने का कारण होता है रुपये-पैसे पर लड़ाई-झगड़ा, दारु की लत, दूसरी औरत का चक्कर और सास-ससुर आदि की नोक-झोंक। ऊपर दी दोनों सच्ची घटनाएं हैं। पति-पत्नी के आपसी संबंध कच्चे धागे की तरह हैं। उन्हें बड़े यत्न से संभाल कर चलना होता है। गलती दोनों की हो सकती है लेकिन इस पुरुष-प्रधान समाज में ज्यादातर पति की गलती होती है। पत्नी को समझदारी से, बिना आत्म-सम्मान खोए चुनौती का सामना करना होगा।

शारदा जैन